लहसुन की खेती

भारत में लहसुन की खेती मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश एवं उड़ीसा में बड़े पैमाने पर की जाती है। भारत के कुल लहसुन उत्पादन का 50 प्रतिशत केवल मध्यप्रदेश एवं गुजरात से प्राप्त होता है। विशेष तौर पर इन्दौर एवं मन्दसौर म.प्र. में लहसुन उगाये जाने प्रमुख क्षेत्र है। लहसुन की खेती उन्नत एवं वैज्ञानिक तरीके से किया जाये तो न सिर्फ अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है बल्कि गुणवत्ता भी अच्छी होती है।

उपयुक्त मौसम एवं मिट्टी

इन्दौर अथवा मालवा क्षेत्र की जलवायु लहसुन उत्पादन के लिये सर्वोत्तम मानी जाती है। लहसुन की फसल को बढ़वार के समय ठंड एवं नम मौसम की आवश्यकता होती है जबकि इसे बल्ब (कंद) को पकने एवं बढ़ने के लिये अपेक्षाकृ त गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। सामान्य रुप से वृद्धि के समय ठंडा मौसम हो तो अधिक उत्पादन मिलता है। बल्ब बनने के समय मौसम का ठंडा होने से कलियां फूट आती है।

लहसुन की खेती के लिये मध्यम काली मिट्टी उपयुक्त होती है जो हमारे क्षेत्र में प्रमुखता से पाई जाती है किन्तु खेत में अगर अच्छी सड़ी गोबर की खाद मिला हो तथा जल निकास का उचित प्रबंध हो तो लहसुन का उत्पादन एवं आकार अधिक अच्छा मिलता है।

लहसुन की प्रमुख किस्मे है –

गोदावरी, स्वेता, एल.जी. 1, एच. जी. 6, पूसा सेलेक्शन 10, एल.सी.जी., एग्रीफाउन्ड व्हाईट (जी 41), यमुना सफेद, यमुना सफेद 2, जी. 282 एवं एग्रीफाउन्ड पार्वती। उपरोक्त किस्मों में जी. 282 एवं एग्रीफाउन्ड पार्वती को छोड़कर सभी किस्मों के कलियां छोटी आकार की होती है तथा प्रति बल्ब 20–30 कलियां होती है।

खाद एवं उर्वरक

कम्पोस्ट की खाद अथवा गोबर की खाद अगर खेत में अच्छी तरह मिला हो तो लहसुन के उत्पादन एवं गुणवत्ता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। अतः खेत की तैयारी के समय उदारतापूर्वक लगभग 50 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में मिलाये। 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर रासायनिक उर्वरक के रुप में डालने की अनुशंसा की जाती है। इसके अतिरिक्त 5 कि.ग्रा. बोरान, जिंक एवं मोलीब्डेनम प्रति हैक्टेयर खेत में मिलाना चाहिये। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय डाले तथा शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा को रोपाई के 30 दिन बाद खेत में डालकर सिंचाई करें।

लहसुन की रोपाई

लहसुन को खेत में लगाने के लिये इसकी कलियों का उपयोग किया जाता है। लगभग 500 कि.ग्रा. लहसुन जिसका कलियों का व्यास लगभग 8 से 10 मिलीमीटर का हो की आवश्यकता होती है।

लहसुन की रोपाई के लिये हमारे क्षेत्र में उपयुक्त विधि डिबलिंग तरीके से लगाना है। इसमें खेतों को क्यारियों में बांट कर 15 सेमी x 8 सेमी की दूरी पर कलियों की रोपाई की जाती है। अगर खेतों में कुंड एवं नाली बनाकर कुंड पर डिबलिंग विधि से लहसुन की बुआई की जाये तो इससे न सिर्फ जल की बचत होगी अपितु बड़े आकार के बल्ब भी प्राप्त होते है। लहसुन को 5 से 7 सेमी. गहरा बोना चाहिये।

लहसुन को ठंड के प्रारंभ होने पर बोते है तथा गर्मी के प्रारम्भ पर निकाल लेते है। हमारे मालवा क्षेत्र में इसके बोने का उपयुक्त समय अक्टूबर माह है।

निंदाई – गुड़ाई

लहसुन की फसल काफी नजदीक लगी होती है अतः रोपाई के 30 से 40 दिन बाद हाथ से निराई – गुड़ाई करनी चाहिये। पेन्डामिथलीन 3.5 लीटर/है एवं 1 बार हाथ से बुआई के 45 दिन बाद निराई करने से लगभग चौड़ी पत्ती के सभी खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। पेन्डामिथलीन दवा को उगने के पहले 625 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

सिंचाई

लहसुन रोपाई के तुरन्त बाद एक हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है उसके बाद आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करना चाहिये।

खुदाई एवं उपज

इसकी फसल 4 से 5 महीने में तैयार हो जाती है। फसल तैयार हो जाने पर पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है। कन्दों को पत्तियों सहित भूमि से निकाल लिया जाता है। विभिन्न किस्मों की उपज लगभग 100–200 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक प्राप्त होता है। जी. 41 किस्म से उपज लगभग 140 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक प्राप्त हो जाता है जबकि जी 282 से 175 से 200 क्विंटल प्रति हे. तक उपज प्राप्त होता है।

पादप सुरक्षा

लहसुन की फसल को थ्रिप्स से काफी नुकसान होता है। पीला अथवा सफेद रंग का सूक्ष्म कीट जो आंखों से दिखाई नहीं देता है लहसुन की पत्तियों के बीच छुपा रहता है तथा पत्तियों का रस चूसता है। इस कीट के नियंत्रण के लिये नीम का तेल 5 मिली. प्रति लीटर का छिड़काव करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण के लिये मोनोक्रोटोफास, फास्फेमीडान डायमिथोएट अथवा मिथाइल डेमेटान नामक दवा का 0.05 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

डॉ. डी.के. मिश्रा
विषय वस्तु विशेषज्ञ – उद्यानिकी
कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर

कृषि विज्ञान केन्द्र

भाकृअनुप
ICAR

लहसुन की खेती

कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट
कस्तूरबाग्राम, इन्दौर (म. प्र.) –452 020
दूरभाष – 0731–2874552